ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 233-236**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

हिन्द स्वराज के सन्दर्भ में गाँधीवादी स्वराजः नैतिक समाज निर्माण और समरसता का समालोचनात्मक विश्लेषण

डॉ0 महेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर– इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय पतलोट– नैनीताल, (उत्तराखण्ड) भारत

Received-13.06.2024, Revised-20.06.2024, Accepted-27.06.2024 **E-mail :mahesh010485@gmail.com**

सारांश– यह शोध पत्र हिन्द स्वराज के संदर्भ में महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित स्वराज की अवधारणा का नैतिक समाज निर्माण और सामाजिक समरसता के परिप्रेक्ष्य में सही परिभाषा तथा आधुनिक युग की व्यवस्थाओं का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन दो प्रमुख आयामों पर आधारित है। प्रथम आयाम के अंतर्गत गांधीवादी स्वराज के यथार्थ स्वरूप का परीक्षण करते हुए उसे वैयक्तिक आत्म–विकास, नैतिक अनुशासन तथा सामाजिक समरसता के मूलाधार के रूप में विश्लेषित किया गया है, जिसमें यह प्रतिपादित किया गया है कि व्यक्ति का आत्म–नियंत्रण और नैतिक विकास ही एक न्यायपूर्ण और समरस समाज की स्थापना का आधार बनता है। द्वितीय आयाम के अंतर्गत आधुनिक सभ्यता तथा उसकी प्रमुख संस्थाओं, जैसे रेलगाड़ी, न्याय–व्यवस्था एवं चिकित्सा प्रणाली के प्रति गांधी जी द्वारा प्रस्तुत दृष्टिकोण का समालोचनात्मक परीक्षण किया गया है, जिससे यह प्रतिपादित होता है कि अनियंत्रित भौतिक प्रगति सामाजिक संतुलन एवं नैतिक मूल्यों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है।

अध्ययन का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि गांधीवादी स्वराज एक समग्र नैतिक–दार्शनिक दृष्टि है, जो व्यक्तिगत आत्म–संयम और सामाजिक पुनर्निर्माण को परस्पर संबद्ध प्रक्रियाओं के रूप में स्थापित करती है। गांधी जी के अनुसार, वास्तविक स्वराज राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह तभी संभव है जब व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण स्थापित कर नैतिक मूल्यों का पालन करे, जिससे समाज में न्याय, समानता और समरसता की स्थापना हो सके। अतः गांधी जी का चिंतन समकालीन समाज के लिए एक महत्वपूर्ण वैचारिक मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिसमें नैतिकता, अहिंसा और समरसता के माध्यम से संतुलित एवं सतत विकास की संभावना निहित है, तथा वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियों के समाधान हेतु एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

कुंजीभूत शब्द– गांधीवादी स्वराज, नैतिक समाज निर्माण, सामाजिक समरसता, आत्म–नियंत्रण, आत्म–संयम, अहिंसा, न्याय, समरसता।

प्रस्तावना– आधुनिक युग में भौतिकतावाद ने मानव जीवन की प्राथमिकताओं को इस सीमा तक परिवर्तित कर दिया है कि भौतिक सुख–सुविधाएँ ही सफलता और संतोष का प्रमुख मानक बनती जा रही हैं। इस प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप मनुष्य आंतरिक शांति, नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व से दूर होता जा रहा है। इस संदर्भ में आशीष नन्दी का मत है कि "modern civilization represents a crisis of moral foundations." (नन्दी, 1987, पृ. 143) इससे स्पष्ट होता है कि केवल भौतिक प्रगति पर आधारित जीवन–दृष्टि मानव जीवन की संपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकती। इसी कारण नैतिकता, आत्मचेतना और सामाजिक समरसता पर आधारित वैकल्पिक प्रतिमानों की खोज आवश्यक हो जाती है, जिसमें गांधी जी की पुस्तक हिन्द स्वराज में वर्णित स्वराज का अर्थ एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। यह कृति गांधी जी के सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक चिंतन को समग्र रूप में समझने का माध्यम भी बनती है। बिद्युत चक्रवर्ती के अनुसार, "Hind Swaraj" is one of the most significant treaties that Gandhi wrote to clarify his views. Hind Swaraj is perhaps the most systematic exposition of Gandhi's ideas of state, society and nation." (चक्रवर्ती, 2011, पृ. 3)

हिन्द स्वराज मूलतः गुजराती भाषा में लिखी गई थी और बाद में अंग्रेजी में अनुवादित हुई। इसका प्रथम प्रकाशन दक्षिण अफ्रीका के साप्ताहिक इन्डियन ओपिनियन में हुआ था। यह राष्ट्रवाद की पारंपरिक अवधारणा से आगे बढ़कर प्रेम, अहिंसा और आत्मबलिदान जैसे नैतिक मूल्यों को केंद्र में स्थापित करती है। गांधी जी ने "स्वराज" को आत्म–नियंत्रण, नैतिक स्वायत्तता और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित एक समग्र प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया है। इस संदर्भ में भीखू पारेख का मत है कि "swaraj is a form of moral self-rule grounded in ethical responsibility." (पारेख, 2001, पृ. 84) इसके अतिरिक्त गांधी जी यह भी स्पष्ट करते हैं कि औपनिवेशिक शासन केवल बाहरी प्रभुत्व का परिणाम नहीं था, बल्कि भारतीय समाज द्वारा पश्चिमी सभ्यता और उसके मूल्यों को मानसिक रूप से स्वीकार करने की प्रवृत्ति से भी जुड़ा था, जिसे पारेल एक व्यापक सभ्यता–विमर्श के रूप में देखते हैं।

इसी के सापेक्ष गांधी जी आधुनिक संस्थाओं–जैसे परिवहन, न्याय और चिकित्सा व्यवस्था का विश्लेषण करते हुए यह इंगित करते हैं कि अनियंत्रित भौतिक प्रगति व्यक्ति की आत्मनिर्भरता, नैतिक चेतना और सामाजिक संतुलन को प्रभावित कर सकती है। गांधी जी के अनुसार सत्याग्रह ही स्वराज की कुंजी है, अर्थात वास्तविक स्वराज की स्थापना "सत्य" और "आत्मबल" के माध्यम से ही संभव है, जो व्यक्ति के नैतिक अनुशासन और आत्मसंयम पर आधारित है। (गांधी, 2020, पृ. 94) गांधीवादी नैतिकता के मूल में सत्य और अहिंसा के सिद्धांत निहित हैं, जैसा कि कहा गया है–"दुनिया का आधार भौतिक बल न होकर सत्य, दया व आत्मबल है", जो परिलक्षित करता है कि गांधी के अनुसार अहिंसा और सामाजिक समरसता ही नैतिक समाज निर्माण के मूल आधार हैं। (सिंह और पाराशर, 2024, पृ. 2)

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में, हिन्द स्वराज के अंतर्गत प्रस्तुत स्वराज की अवधारणा एक ओर वैयक्तिक आत्म–विकास, नैतिक अनुशासन और सामाजिक समरसता के माध्यम से एक संतुलित समाज के निर्माण को दिशा प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर यह आधुनिक सभ्यता और उसकी संस्थाओं के अंतर्निहित विरोधाभासों को उजागर करते हुए उनके नैतिक प्रभावों की समालोचनात्मक समीक्षा भी प्रस्तुत करती है।

इसी आधार पर प्रस्तुत शोध को दो परस्पर संबद्ध आयामों में विश्लेषित किया गया है–प्रथम, गांधीवादी स्वराज और नैतिक समाज निर्माण तथा द्वितीय, समालोचनात्मक विश्लेषण। इस प्रकार यह विश्लेषण गांधी के चिंतन को एक ऐसे समग्र प्रतिमान के रूप में स्थापित करने का प्रयास करता है, जिसमें नैतिक निर्माण और आलोचना दोनों एक–दूसरे के पूरक रूप में कार्य करते हैं।

विश्लेषण–

1. गांधीवादी स्वराज और नैतिक समाज निर्माणः स्वराज की अवधारणा एक व्यापक नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक सिद्धांत के रूप में विकसित होती है। "स्वराज" शब्द "स्व" और "राज" दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ आत्म–शासन है। महात्मा गांधी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

के अनुसार स्वराज का अर्थ व्यक्ति का अपने ऊपर शासन है, जिसमें वह अपने मन, इच्छाओं और इंद्रियों पर नियंत्रण स्थापित करता है। (गांधी, 2020, पृ. 58) इस प्रकार, आंतरिक स्वतंत्रता की अवस्था है।

गांधीवादी दृष्टिकोण में यह स्पष्ट है कि राजनीतिक स्वतंत्रता स्वराज का केवल एक सीमित आयाम है। यदि राजनीतिक सत्ता परिवर्तन के बावजूद समाज में विदेशी जीवन–पद्धतियाँ, मूल्य–व्यवस्था और सांस्कृतिक प्रभाव हावी रहते हैं, तो वास्तविक स्वराज की प्राप्ति अधूरी रहती है। इस परिप्रेक्ष्य में स्वराज को नैतिक स्वायत्तता और सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में समझा जाना चाहिए, जो व्यक्ति और समाज दोनों के आंतरिक परिवर्तन पर आधारित हो।

महात्मा गांधी ने हिन्द स्वराज में स्वराज को विभिन्न आयामों के आधार पर समझाने का प्रयास किया है। राजनीतिक दृष्टि से उन्होंने प्रतिनिधि संसदीय प्रणाली की आलोचना की और यह तर्क दिया कि केवल चुनावी प्रक्रिया से स्वराज सुनिश्चित नहीं होता, जब तक शासन नैतिक उत्तरदायित्व से युक्त न हो। (गांधी, 2020, पृ. 27.28)

सभ्यता के संदर्भ में गांधी जी का मानना है कि ”सभ्यता वह आचरण है जिसमें आदमी अपना दायित्व पूर्ण करता है। दायित्व पूर्ण करने का अर्थ है नीति का पालन करना जिसका अर्थ है अपने मन और इंद्रियों को नियंत्रित रखना। ऐसा करते हुए हम स्वयं को पहचानते हैं, यही सभ्यता है, इससे जो विपरीत है वह अनिष्टकारी है।'' (गांधी, 2020, पृ. 53) गांधी जी के अनुसार जब सभ्यता का आधार नैतिक आत्मसंयम के स्थान पर केवल भौतिक उपभोग और सुविधा बन जाता है तब व्यक्ति समुदाय और मानवीय संबंधों से विमुख होने लगता है। इसी संदर्भ में किरन ताजबख्श का मत है–“Loss of traditional community isolates men and women who are then exposed to the crushing forces of impersonal bureaucracy and dehumanizing.” (ताजबख्श, 2018, पृ. 5)

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में स्वराज समाज में परस्पर सहयोग, विश्वास और एकता की भावना को प्रोत्साहित करता है। यह ऐसी सामाजिक व्यवस्था की कल्पना करता है, जिसमें व्यक्ति आत्म–नियंत्रित रहते हुए सामूहिक जिम्मेदारी का पालन करते हैं, परिणामतः सामाजिक समरसता विकसित होती है। इसी नैतिक–सामाजिक संरचना के भीतर गांधीवादी विचार ”नर सेवा नारायण सेवा” के सिद्धांत को विशेष महत्व देता है। (सिंह और पाराशर, 2024, पृ. 1)

शिक्षा के संदर्भ में गांधी का मत है कि वास्तविक शिक्षा वह है, जो व्यक्ति के शरीर, मन और बुद्धि को संतुलित एवं नियंत्रित बनाती है। इसके विपरीत, औपनिवेशिक शिक्षा केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित रहकर व्यक्ति को न तो नैतिक बनाती है और न ही उसे समाज के प्रति उत्तरदायी बनाती है साथ ही वह उसे उसकी सांस्कृतिक जड़ों से भी अलग करती है। (गांधी, 2020, पृ. 79)

आर्थिक और तकनीकी संदर्भ में गांधी जी यह मानते हैं कि यदि मशीनों और यंत्रों का अत्यधिक उपयोग व्यक्ति को आत्मनिर्भरता से दूर करता है, तो यह स्वराज के मूल सिद्धांतों के विरुद्ध है। वे स्थानीय अर्थव्यवस्था और स्वदेशी उत्पादन को आत्मनिर्भरता का आधार मानते हैं। (गांधी, 2020, पृ. 30.32)

इस प्रकार, गांधीवादी दृष्टिकोण में स्वराज एक बहुआयामी अवधारणा है, जो राज्य–केंद्रित संरचना से अधिक व्यक्ति और समाज के नैतिक पुनर्गठन की प्रक्रिया को व्यक्त करती है। इसी व्यापक ढाँचे के भीतर वैयक्तिक विकास और नैतिक समाज निर्माण परस्पर पूरक प्रक्रियाएँ हैं। गांधी जी के अनुसार व्यक्तिगत विकास एक नैतिक प्रक्रिया है, जो आंतरिक अनुशासन, आत्मनियंत्रण और चरित्र निर्माण से प्रारंभ होकर सामाजिक सद्भाव एवं अहिंसा की स्थापना तक विस्तृत होती है। व्यक्तिगत विकास सामाजिक उत्तरदायित्व और सह–अस्तित्व की क्षमता से जुड़ा हुआ है। धार्मिक विविधता के संदर्भ में गांधी जी सहिष्णुता को नैतिक विकास का आधार मानते हैं। इस संदर्भ में यह कथन उल्लेखनीय है–”धर्म और नैतिकता एकार्थक शब्द हैं एवं दोनों आपस में इस प्रकार गुंथे हुए हैं कि वे एक दूसरे से अपृथक्करणीय हैं”। (सिंह और पाराशर, 2024, पृ. 1)

इसी क्रम में गांधी जी करुणा (दया) को व्यक्ति के नैतिक विकास के केंद्र में रखते हैं। वे तुलसीदास के वचन उद्धृत करते हैं–”दया धरम को मूल है”–जो प्रतिपादित करता है कि करुणा नैतिक जीवन का आधार है, जबकि अहंकार नैतिक पतन का कारण है। (गांधी, 2020, पृ. 69) इस प्रकार, वैयक्तिक विकास और नैतिकता एक–दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हैं। गांधी जी के अनुसार समाज व्यक्तियों की समष्टि है। अतः नैतिक समाज का निर्माण तभी संभव है, जब उसके सदस्य नैतिक मूल्यों से संचालित हों।

निष्कर्षतः, गांधी के चिंतन में वैयक्तिक विकास और नैतिक समाज निर्माण का आधार अहिंसा, समरसता और नैतिक अनुशासन है। इस प्रकार, स्वराज व्यक्ति के नैतिक आत्म–विकास और समाज के अहिंसक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है।

2. समालोचनात्मक विश्लेषणः महात्मा गाँधी द्वारा रचित हिन्द स्वराज आधुनिक सभ्यता, उसकी संस्थाओं तथा विकास के विविध आयामों का एक गहन नैतिक एवं दार्शनिक आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। गांधी जी के अनुसार वास्तविक प्रगति केवल तकनीकी या भौतिक उन्नति नहीं है, बल्कि वह है, जो नैतिकता, मानवीयता और सामाजिक संतुलन के साथ संगत हो। इसी सन्दर्भ में गाँधी जी की आधुनिक सभ्यता के आलोचनात्मक दृष्टिकोण को नैतिक आलोचना बताते हुए पारेख का कथन है– Development cannot be separated from human moral value.

महात्मा गांधी रेलगाड़ी के उदाहरण के माध्यम से आधुनिक तकनीकी सभ्यता की प्रकृति पर प्रश्न उठाते हैं। उनके अनुसार पारंपरिक परिवहन व्यवस्था केवल गति का साधन नहीं थी, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के आदान–प्रदान का माध्यम भी थी, जहाँ लोग संवाद के माध्यम से परस्पर समझ विकसित करते थे। (गांधी, 2020, पृ. 41) इसके विपरीत, आधुनिक रेल व्यवस्था ने यात्रा को तीव्र तो बनाया, किंतु सामाजिक निकटता और मानवीय संवाद की प्रक्रिया को कमजोर किया। इस प्रकार, यात्रा का नैतिक–सामाजिक स्वरूप यांत्रिक गति में परिवर्तित हो गया।

गांधी जी यह भी तर्क देते हैं कि तीव्र आधुनिक परिवहन ने जहाँ वैश्विक संपर्क को बढ़ाया है, वहीं इसने रोगों और महामारियों के प्रसार की संभावना को भी तीव्र किया है। (गांधी, 2020, पृ. 40) इस संदर्भ में कोविड–19 महामारी एक समकालीन उदाहरण प्रस्तुत करती है, जिसमें वैश्विक गतिशीलता ने संक्रमण के प्रसार को तेज किया। यह उदाहरण गांधी जी की आधुनिक सभ्यता की व्यापक समालोचना को समझने का एक ठोस आधार प्रदान करता है, जिससे इंगित होता है कि गांधी जी का आलोचनात्मक दृष्टिकोण आधुनिकता के उस व्यापक स्वरूप की समालोचना है, जो मानव के नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आयामों को कमजोर करती है।

इसी कड़ी में, गांधी जी आधुनिक न्यायिक व्यवस्था की आलोचना करते हैं, वे इसे केवल कानूनी संस्था नहीं, बल्कि सामाजिक संबंधों और नैतिक चेतना को प्रभावित करने वाली संरचना मानते हैं। उनके अनुसार एक आदर्श समाज पारस्परिक विश्वास, संवाद और

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

नैतिक उत्तरदायित्व पर आधारित होना चाहिए। गांधी जी न्यायालयी प्रक्रियाओं की भूमिका पर भी प्रश्न उठाते हैं, क्योंकि उनके अनुसार यदि विवादों का समाधान केवल न्यायालयों के माध्यम से किया जाए, तो यह सामाजिक एकता के स्थान पर विभाजन को बढ़ावा दे सकता है (गांधी, 2020, पृ. 48.49)। बक्शी के अनुसार आधुनिक न्याय व्यवस्था की जटिलता और संरचनात्मक असमानता सामान्य नागरिक के लिए न्याय को कठिन बना देती है। हालांकि, आधुनिक राज्य व्यवस्था में विधिक संस्थाओं का अस्तित्व आवश्यक है, क्योंकि वे अधिकारों की सुरक्षा और सामाजिक स्थिरता सुनिश्चित करती हैं। इसलिए गांधी जी की आलोचना न्याय व्यवस्था के विरोध में नहीं, बल्कि उसमें मानवीय और नैतिक सुधार की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

इसी क्रम में गांधी जी आधुनिक चिकित्सा प्रणाली की भी आलोचना करते हैं। उनके अनुसार आधुनिक समाज में व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के प्रति आत्म–जिम्मेदारी खोता जा रहा है और अत्यधिक चिकित्सकीय निर्भरता विकसित हो रही है (गांधी, 2020, पृ. 51)। इलिच के अनुसार आधुनिक चिकित्सा प्रणाली कई बार व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने के बजाय "Institutional dependency" में बदल देती है। अतः चिकित्सा व्यवस्था का यह स्वरूप व्यक्ति की स्वायत्तता को कमजोर कर सकता है।

उपरोक्त आलोचनात्मक विश्लेषण यह दर्शाता है कि महात्मा गांधी आधुनिक संस्थाओं जैसे रेल, न्याय व्यवस्था और चिकित्सा प्रणाली की आलोचना उनके अस्तित्व के विरोध में नहीं करते, बल्कि उनके नैतिक और मानवीय प्रभावों के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता पर बल देते हैं। इसी संदर्भ में रुडोल्फ सी. हेरेडिया का मत महत्वपूर्ण है–"Gandhi's Hind Swaraj is not rejection of liberative contribution of modernity. Rather his efforts can be interpreted to integrate these positive elements with a liberating reinterpretation of tradition. With his critique from the tradition, Gandhi becomes the great synthesizer of contraries within and across traditions." (हेरेडिया, 1999, पृ. 1497–1502) हेरेडिया के इस दृष्टिकोण से स्पष्ट होता है कि गांधी जी आधुनिकता के पूर्ण विरोधी नहीं थे, बल्कि वे ऐसी वैकल्पिक आधुनिकता के पक्षधर थे जो नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को क्षति न पहुँचाए। इसी परिप्रेक्ष्य में, Gandhi did not completely reject modernity; rather, he was open to alternative forms of modernity provided that they did not undermine the ethical and spiritual self. His critique of modern civilization primarily focuses on its excessive emphasis on bodily welfare, the domination of human life by machinery and capital, and the marginalization of alternative conceptions of the good life. He also acknowledged the importance of several Western thinkers-such as Tolstoy, Ruskin, Thoreau, and Plato—in shaping an understanding of his ideas as reflected in Hind Swaraj. (चिमनी, 2012, पृ. 1159–1173) इन विचारों से परिलक्षित होता है कि गांधी आधुनिकता और परंपरा के बीच विरोध नहीं, बल्कि उनके रचनात्मक समन्वय पर बल देते हैं।

निष्कर्ष– उपरोक्त विश्लेषण के आलोक में यह स्पष्ट होता है कि गांधीवादी स्वराज को केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा के रूप में नहीं, बल्कि एक गतिशील और सतत नैतिक प्रक्रिया के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। महात्मा गाँधी का चिंतन इस तथ्य पर बल देता है कि किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति का आधार उसकी नैतिक चेतना, आत्मानुशासन और मानवीय संबंधों की गुणवत्ता में निहित होता है।

समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जहाँ एक ओर तकनीकी उन्नति, वैश्वीकरण और आर्थिक विकास अभूतपूर्व स्तर पर पहुँचे हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक विखंडन, मानसिक तनाव तथा पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याएँ भी तीव्र हुई हैं। यह स्थिति इस बात को चिन्हित करती है कि वर्तमान विकास प्रतिमान में नैतिक संतुलन का अभाव है। इस संदर्भ में गांधीवादी स्वराज एक वैकल्पिक बौद्धिक एवं नैतिक ढाँचा प्रस्तुत करता है, जो विकास को मानवीय गरिमा, संतुलन और उत्तरदायित्व से जोड़ने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

यह अध्ययन इस तथ्य को भी रेखांकित करता है कि स्थायी सामाजिक परिवर्तन के लिए केवल बाह्य संरचनात्मक सुधार पर्याप्त नहीं होते, बल्कि आंतरिक नैतिक परिवर्तन अनिवार्य है। इस दृष्टि से स्वराज को एक ऐसे प्रतिमान के रूप में देखा जा सकता है, जो व्यक्तिगत आचरण और सामूहिक जीवन के मध्य गहरे नैतिक संबंध की स्थापना करता है।

नीतिगत स्तर पर गांधीवादी दृष्टिकोण विकास, शासन और शिक्षा की पुनर्परिभाषा की आवश्यकता को रेखांकित करता है। वर्तमान संदर्भ में यह अत्यंत आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, आत्मसंयम तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को केंद्रीय स्थान प्रदान किया जाए, ताकि व्यक्तियों में संतुलित एवं उत्तरदायी नागरिकता का विकास हो सके। इसी प्रकार आर्थिक नीतियों में विकेंद्रीकरण, स्वदेशी तथा आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिससे स्थानीय संसाधनों का न्यायसंगत उपयोग और सतत विकास सुनिश्चित हो सके। साथ ही, सामाजिक विविधता को संघर्ष के बजाय संवाद और सह–अस्तित्व के आधार पर समझा जाए। इसके अतिरिक्त, आधुनिक चिकित्सा और तकनीकी प्रणालियों के संदर्भ में भी यह आवश्यक है कि मानव–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया जाए, जिससे व्यक्ति की स्वायत्तता और नैतिक जिम्मेदारी बनी रहे।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि गांधीवादी स्वराज एक सतत आत्ममूल्यांकन और नैतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है। भविष्य में इसकी प्रासंगिकता इस बात पर निर्भर करेगी कि इसे समकालीन चुनौतियों–जैसे पर्यावरणीय संकट, सामाजिक असमानता और नैतिक विघटन के समाधान के रूप में कितनी रचनात्मकता और संवेदनशीलता के साथ लागू किया जाता है। इस प्रकार, गांधी जी का चिंतन आज भी एक सशक्त वैचारिक दिशा प्रदान करता है, जो आधुनिकता के साथ संतुलित और नैतिक सह–अस्तित्व की संभावना को उद्घाटित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गांधी, महात्मा (2020), हिंद स्वराज, अरावली प्रकाशन, पृ. 94, 58, 27–28, 53, 79, 30–32, 69, 41, 40, 48–49, 51.
2. नंदी, ए, (1987), फ्रॉम आउटसाइड द इम्पीरियम इन ट्रेडिशन्स, टायरनी एंड यूटोपियाजः एसेज इन द पॉलिटिक्स ऑफ अवेयरनेस, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 143.
3. चक्रवर्ती, बी. (2011), गांधीज हिन्द स्वराजः ए क्रिटीक ऑफ रिसीव्ड विजडम ऑन फ्रीडम, डेमोक्रेटाइजेशन एंड राइट्स, ए.पी.एस. ए. 2011 एनुअल मीटिंग पेपर, https://ssrn.com/abstract=1900406
4. पारेख, बी. (2001), गांधीः ए वेरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन, ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 84.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

5. सिंह, रीता देवी, पाराशर, बी. डी. (2024), गांधी दर्शन में नैतिकता की प्रासंगिकता, इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (IJFMR), पृ. 1—2.
6. ताजबख्श, के. (2018), हिन्द स्वराजः रीडिंग गांधीज क्रिटिक्स ऑफ मॉडर्निटी इन तेहरान, सोशल चेंज, पृ. 5.
7. हेरेडिया, रूडोल्फ सी. (1999), इंटरप्रेटिंग गाँधीज हिन्द स्वराज, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 34, न. 24, पृ. 1497—1502. JSTOR, http://www.jstor.org/stable/4408073. Accessed 18 Jul. 2022.
8. चिमनी, बी. एस. (2012), द सेल्फ, मॉडर्न सिविलाइजेशन एंड इंटरनेशनल लॉः लर्निंग फ्रॉम मोहनदास करमचंद गांधीज हिन्द स्वराज ऑर इंडियन होम रूल, यूरोपियन जर्नल ऑफ इंटरनेशनल लॉ, पृ. 1159—1173.

*****